उद्भावना

जन भावनाओं का साझा मंच

अंक : 148-149

मूल्य : 50 रुपये

75 वर्ष

एक मूल्यांकन

उद्भावना

वर्ष : 38 अंक : 148-149

जुलाई-दिसंबर 2022

नवंबर, 2022 में प्रकाशित

सलाहकार मंडल

असग़र वजाहत, डॉ. राजकुमार शर्मा,
राजेश जोशी, रामप्रकाश त्रिपाठी

संपादक मंडल

अजेय कुमार (संपादक)
हरियश राय (उप संपादक)
मुशर्रफ अली
विनीत तिवारी

सहयोग

रामपाल कटवालया

संपादकीय पता

एच-55, सेक्टर 23, राजनगर, गाजियाबाद

पत्राचार का पता

ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रिअल एरिया,
जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095

फोन : 011-35001911, मो. 9811582902
E-mail : pd.press@gmail.com

आवरण : राजकुमार

सहयोग राशि

यह अंक	:	50 रु.
वार्षिक	:	300 रु.
संस्थानों से वार्षिक	:	500 रु.
आजीवन (व्यक्ति)	:	3000 रु.
आजीवन (संस्थानों के लिए)	:	5000 रु.

सभी मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट **'उद्भावना'** के नाम से पत्राचार के पते पर ही भेजें. जो पाठक हमारे अकाउंट में सीधे जमा करना चाहते हैं, वे कृपया निम्न सूचना देखें

अकाउंट : UDBHAVANA
अकाउंट न. : 90261010002100
बैंक : Canara Bank
ब्रांच : राजेंद्र नगर, नई दिल्ली-110060
IFSC : CNRB0019026

आजीवन सदस्यों को अब तक छपे सभी उपलब्ध महत्त्वपूर्ण विशेषांक भेंट स्वरूप दिए जाएंगे

पत्रिका में छपे विचार लेखकों/लेखिकाओं के अपने हैं, उनसे संपादकीय सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

आज़ादी के 75 वर्ष - एक मूल्यांकन

जिस रणनीति ने बनाया और जिन नीतियों ने सब बिगाड़ दिया **सत्येंद्र रंजन** 26
नफरत की राजनीति के 75 वर्ष **मुशर्रफ अली** 31
आज़ादी से लेकर अमृत महोत्सव तक का आर्थिक सफ़र **मुशर्रफ़ अली** 37
आज़ाद मुल्क में तालीम हाल-बेहाल **लाल्टू** 40
आइ.एन.एस. विक्रांत और आत्मनिर्भरता **दोराईस्वामी रघुनन्दन** 44
स्त्री आंदोलन के 75 वर्ष **रामकली सराफ** 47
आजादी के पचहत्तर साल बाद दलित आंदोलन **सुभाष गाताड़े** 55
आजादी के बाद की कहानी **सूर्यनाथ सिंह** 64

आलेख व टिप्पणियाँ

पंडित जवाहरलाल नेहरू का ऐतिहासिक भाषण 11
हाथ में तिरंगा, बगल में भगवा **बादल सरोज** 14
नेताजी की विरासत **सुभाषिनी अली** 16
राष्ट्रवाद की घड़ी और लेखक का देश **प्रियदर्शन** 18
महारानी एलिजाबेथ-द्वितीय और तिरंगा **प्रबीर पुरकायस्थ** 21

स्मृति शेष

अलविदा शेखर जोशी **हरियश राय** 5
मैनेजर पांडे **प्रदीप सक्सेना** 10

कहानी

कांटों से खींच के यह आँचल **फरीद खाँ** 85
कथा-डायरी **जाबिर हुसैन** 80

साक्षात्कार

''वे अकबर द्वारा विश्वनाथ मंदिर के बनवाये जाने की बात कभी नहीं करेंगे'' - काशी विश्वनाथ मंदिर के महंत 73

खेल

टेनिस में एक युग की समाप्ति **मनोज चतुर्वेदी** 100

विज्ञान

स्वांते पाबो, पैलियोजेनेटिक्स विज्ञान के जनक! **निर्मल कुमार शर्मा** 104

कविताएँ व ग़ज़लें

कुमार अम्बुज-22, सत्येन्द्र कुमार-68, चंद्रेश्वर-69,
एकान्त श्रीवास्तव-71, रामकिशोर मेहता-72, वशिष्ठ अनूप-78

व्यंग्य

बापू के त्रिदेव बंदर **श्रवण कुमार उर्मलिया** 83

फिल्म समीक्षा

लाल सिंह चड्ढा- **दिनेश श्रीनेत**-97, ब्रह्मास्त्र- **रवींद्र त्रिपाठी**-99

पुस्तक समीक्षा

ढलती साँझ का सूरज-**प्रियदर्शन**-106 / दहन -**जवरीमल्ल पारख** -108, महर्षि मार्क्स के हथकंडे-**हरियश राय**-111, रेत समाधि- **रश्मि मालवीय**-118

रपट

जन लेखक संघ का राष्ट्रीय सम्मेलन-113, जसम का राष्ट्रीय सम्मेलन-114, भवभूति अलंकरण समारोह-116, तीन पुस्तकों का विमोचन-117, जलेस का राष्ट्रीय सम्मेलन-122, अमृत महोत्सव के दौर में प्रतिरोध-123

अपना प्यारा देश हमारा रणक्षेत्र भी है

अपने बच्चों से, जो विदेश में 'सैटेल्ड' हैं, कभी-कभी जब स्वदेश लौटने की बात करता हूं, तो वे मुझे मज़ाक में कहते हैं कि पांच कारण बताओ जो हमें स्वदेश आना चाहिए। एक-दो कारणों के बाद मुझे तर्क नहीं सूझते। और जो तर्क मैं उन्हें बतला नहीं पाता हूं कि अपना देश, अपनी मिली-जुली संस्कृति, अपनी विविधता, खान-पान, पहनावा, लोक-नृत्य। अपना संगीत व अपने लोग, किसान व मज़दूर, उनके संघर्ष और इन संघर्षों में यथासंभव अपनी भागीदारी और इनमें मिल रहे अनुभवों को साझा करने के कुछ क्षण, बहस-बाज़ी, गर्म जोशी, मित्रताएं व दुश्मनियाँ, क्या कम कारण हैं यहीं बसने के लिए। भारत में बसना है तो भारतीय होने पर गर्व करना ज़रूरी है। यह गर्व आज कहाँ दिखाई देता है! के.एल. सहगल का पुराना गाना याद आता है जब मैं कुछ दिन विदेश में रहता हूं, हालांकि वहाँ संदर्भ एकदम अलग है। 'बाबुल मोरा, नैहर छूटो जाए.... मोरा अपना बेगाना छूटो जाए'। इन सब अपनों और बेगानों से ही अपनी दुनिया है और विदेशों में रह रहे बच्चों की दुनिया एकदम अलग है। उनकी सुनें तो हम जैसे लोग केवल अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। इसलिए बच्चे जब उनके साथ विदेश में रहने की ज़िद्द करने लगते हैं तो मैं उनसे कहता हूं, ''15-20 दिन तो रह सकता हूं, परन्तु लौटूंगा यहीं, अपने देश में''।

अपने देशवासियों ने अपनी मेहनत, सूझबूझ व लगन से इस देश को कहाँ से कहाँ पहुंचा दिया है। 1950 में भारत में खाद्य उत्पादन 5 करोड़ 50 लाख टन था जो उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार 2021-22 में बढ़कर 31 करोड़ 50 लाख टन हो गया है। 1950 में सड़कों की लंबाई मात्र 40 हज़ार किलोमीटर थी जो अब बढ़कर 64 लाख किलोमीटर

हो गई है। स्वतंत्रता के समय मात्र 3061 गांवों में ही बिजली थी, आज लगभग सभी 6 लाख गांवों में बिजली उपलब्ध है, बेशक इन गांवों के सभी घरों में बिजली की सप्लाई नहीं है। सामाजिक एवं मानव-विकास मानदण्ड भी कुछ विकास दिखा रहे हैं। आज़ादी के समय औसत आयु 32 वर्ष थी, जो आज बढ़कर 70 वर्ष हो गई है। शिशु मृत्यु दर में भी निरंतर कमी आई है। 1950 में 1000 बच्चों में से 146 बच्चों की मौत हो जाती थी, जो आज घटकर 28 रह गई है। पिछले 75 वर्षों में जनसंख्या 4 गुणा बढ़ गई है लेकिन प्रतिव्यक्ति आय भी 13 गुणा बढ़ी है।

ये तमाम आंकड़े सही हैं फिर भी क्या कारण है कि वैश्विक भुखमरी सूचकांक के पैमाने पर भारत कुल 116 देशों की सूची में 107वें स्थान पर है। पाकिस्तान, नेपाल, बंगलादेश हमसे आगे है। कद के हिसाब से वज़न में कमी वाले बच्चों की प्रतिशत दर भारत में सबसे अधिक है।

ऐसा नहीं है कि देश में विकास नहीं हुआ है, समस्या यह है कि यह पूंजीवादी विकास है जिसमें 'सीढ़ी के आखिरी पायदान पर खड़े व्यक्ति' की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। अपनी पुस्तक 'समाजवाद क्यों?' में जयप्रकाश नारायण लिखते हैं ''समाजवाद व्यक्तिगत व्यवहार संहिता नहीं है अपितु यह सामाजिक पुनर्निर्माण की व्यवस्था है। जब हम भारत में समाजवाद लाने की बात कहते हैं, तो जो चीज़ सबसे पहले हमें अखरती है वह है असमानताओं के अनोखे और दर्दनाक तथ्य - पद, संस्कति, अवसर की असमानताएं : जीवन की अच्छी-अच्छी चीज़ों का चिंताजनक असमान वितरण। अधिकांश जनता के लिए गरीबी, भूख, गंदगी, बीमारी, अज्ञानता। कुछ चुने हुए खास लोगों के लिए आराम, विलासिता, पद, ताक़त।''

हमारे देश की वर्तमान स्थिति को समझने के लिए पिछले दिनों हुई एक वारदात को याद किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने वंदेमात्रम ट्रेन के नवीनतम संस्करण का उद्घाटन किया। यह एक बड़ा सराहनीय कदम था जिसके उद्घाटन के समय एक वरिष्ठ रेलवे अधिकारी ने इस ट्रेन की विशिष्टतायें गिनाई - आपको हवाई जहाज़ में उड़ने जैसा अनुभव होगा, सीटें आगे पीछे कर सकेंगे, सी.सी.टी.

वी. कैमेरों व वाई-फाई की सुविधा, फॅायर सेंसर्ज़ इत्यादि से यह ट्रेन ''नए दौर की ट्रेन'' साबित होगी।

दुर्भाग्यवश इस ट्रेन के चलने के पहले ही सप्ताह में यह नये युग की ट्रेन ''पुराने युग'' के गाँव से टकरा गई। गायों का झुंड रेलवे लाइन क्रॉस कर रहा था और ट्रेन की नुकीली जहाज़नुमा चोंच एक गाय में घुस गई जिसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। कुछ गायें घायल भी हुईं। अच्छा हुआ, कोई मानव-क्षति नहीं हुई। हम सब रोज़ ही अपनी गाड़ी या स्कूटर चलाते वक्त सड़क के बीच आई गाय के दर्शन प्रायः करते हैं और उसे बचाने के लिए अपनी काबिलियत का इस्तेमाल करते हैं, फिर रेलवे अधिकारियों ने इस बात का ध्यान क्यों नहीं रखा कि ट्रेन के रास्ते में गाय भी आ सकती है। इस घुसपैठ को रोकने के लिए ट्रेन के रास्ते में दोनों ओर कंटीली तार बिछाने का ख्याल रेलवे अधिकारियों को क्यों नहीं आया। कायदे से, सड़कों पर आवारा घूमती गायों का इंतज़ाम भी होना चाहिए जिससे कई दुर्घटनायें बचाई जा सकती हैं। हिंदुस्तान ऐसा देश है जहाँ जान की कीमत बहुत कम है।

पिछले दिनों मेरा दामाद अमरीका से यहाँ आया और उसने अपने दांतों का इम्प्लांट करवाया। मैंने पूछा कि अमरीका में क्यों नहीं करवाया। बोला, वहाँ 4000 डालर लगते, जो कि यहाँ 1000 डालर में हो गया। हमारे यहाँ फाइव-स्टार अस्पतालों में दुनिया भर से मरीज़ रोज़ आ रहे हैं। परन्तु हमारे देश के गाँवों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं। अगर हैं तो वहाँ पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं, डाक्टर नहीं हैं। दुनिया भर में सबसे बुरे स्वास्थ्य सूचकांक हमारे देश में हैं। हम यह कह सकते हैं, कि कई देशों के मुकाबले हमारे देश में वैक्सीन का उत्पादन ज्यादा मात्रा में होता है फिर भी दुनिया में सबसे अधिक बच्चे हमारे यहाँ हैं जिन्हें टीकाकरण की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है।

हमारा एक ऐसा देश है जो शेखी बघार सकता है कि हमारे पास गोदामों में इतना अन्न पड़ा है कि उसका एक हिस्सा चूहे खा जाते हैं परन्तु हमारे लाखों बच्चे भूखे सोते हैं और अधिकांश कुपोषण के शिकार हैं।

दुनिया भर के विकसित देशों में हमारे इंजीनियर और डाक्टर साम्राज्यवादी सरकारों की सेवा में लगे हैं। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सी ई ओ भारतीय मूल के लोग हैं। अब तो वहां संसद व अन्य निर्वाचित संस्थाओं में भी भारतीय लोग उच्च पदों पर विराजमान हैं। ऋषि सुनक तो प्रधानमंत्री के पद पर हैं। हमारे नेता इस बात से खुश होते रहते हैं कि एक हिंदू अब यहाँ-वहाँ बड़े पद पर है। ये नेता भूल जाते हैं कि ये तमाम लोग वित्तीय पूंजी के प्राणी हैं और इन्हें हमारे देश की साधारण जनता से कुछ भी लेना देना नहीं है। वे पढ़-लिखकर साम्राज्यवाद की सेवा में तैनात हैं परन्तु उन्हें इसकी कोई परवाह नहीं कि हमारे देश के बच्चों में से आधे अपनी आयु के अनुसार न्यूनतम शिक्षा के स्तर को भी छू नहीं पाते। वे न पढ़ पाते हैं, न लिख पाते हैं। बेरोज़गारी के कारण पढ़े लिखे इंजीनियर मिस्त्री या बेलदारी का काम करने पर मजबूर हैं। हाल ही के गरीबी रेखा के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। गांवों में 972 रु. प्रति माह प्रति व्यक्ति और शहरों में 1407 रु. यानी इनसे ऊपर लोग गरीब नहीं माने जाते। आज की मंहगाई को देखते हुए इन लोगों के पास भूखे सोने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। 2014 से 2021 के बीच लगभग 2.5 लाख दिहाड़ी मज़दूर आत्महत्या करने को मजबूर हुए हैं। कल बच्चों की पढ़ाई पर ज़ोर दिया जा रहा है परन्तु शिक्षा को गरीबों के लिए सस्ता नहीं किया जा रहा है। मैंने देखा है कि घरों में काम करने वाली महिलाएं अपने आहार में कटौती करती हैं क्योंकि बच्चों को अच्छे स्कूलों में भर्ती कराने के लिए उन्हें अपनी आय की अच्छी खासी रकम खर्च करनी पड़ती है। लिहाज़ा देश में भूख बढ़ रही है, जो बढ़ती गरीबी की निशानी है। अगर शिक्षा मुफ्त या सस्ती हो तो इसका अनुकूल असर महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ेगा और देश विश्व भूख सूचकांक में थोड़ा ऊपर जा सकेगा।

न्याय और समानता पर आधारित एक देश बनाने और संवारने, इसकी विविधता को बचाने के लिए जद्दोजहद करने की इच्छाशक्ति हमारे मध्यवर्गीय लोगों के बच्चों में कम दिखलाई पड़ती है। दुनिया के एक बड़े हिस्से को धार्मिक संकीर्णता, जातिगत भेदभाव और सांप्रदायिक घृणा से मुक्ति दिलाने के कार्य में आज की युवा पीढ़ी की दिलचस्पी अपेक्षाकृत बहुत कम है, इसलिए केसरिया पलटन उन्हें बहका कर अपने पीछे लगाने में सफल होती दिख रही है। वह सबको सबक सिखाने के लिए उतारू है विशेषकर

पाकिस्तान और मुसलमानों को और उन हिंदुओं को भी जो उनके हिंदुत्व को उन्माद फैलाने का औज़ार मानते हैं।

यह बहुत दिलचस्प है कि बहुसंख्यक राष्ट्रवाद जितना मज़बूत हो रहा है, राष्ट्र उतना ही कमज़ोर हो रहा है। जिन लोगों ने अंग्रेजों का साथ दिया, वे आज हमें देशभक्ति का पाठ पढ़ा रहे हैं। 'सिंहावलोकन' पुस्तक में क्रांतिकारी लेखक यशपाल ने सावरकर के बारे में रोंगटे खड़े कर देने वाली सूचना दी थी। उन्होंने लिखा 'कि भगत सिंह की गिरफ्तारी के बाद, चंद्रशेखर आजाद ने उन्हें सावरकर के पास कुछ मदद मांगने के लिए भेजा। सावरकर के बड़े भाई बाबाराव, जो आरएसएस के संस्थापकों में से एक हैं, ने उनसे साफ़ कहा कि वे अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए उनकी कोई मदद नहीं कर सकते हैं लेकिन अगर वे अंग्रेजों का साथ देने के लिए तैयार हैं तो वह उनके संपर्क सूत्र बनने के लिए तैयार हैं। इसके अलावा उन्होंने यह भी कहा कि अगर वे जिन्ना की हत्या करने के लिए तैयार हैं तो उन्हें हथियार उपलब्ध कराये जा सकते हैं। जब इस बातचीत की रिपोर्ट यशपाल ने चंद्रशेखर आज़ाद को दी तो उन्होंने सावरकर को भला-बुरा कहा!'

(यशपाल, पृष्ठ 253 से 262, ''सूत्रों का विस्तार सिंहावलोकन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

पिछले कुछ वर्षों से बहुत से एक्टिविस्टों जैसे तीस्ता सीतलवाड, गौतम नवलखा, आनंद तुलतुम्डे, साईबाबा इत्यादि को जेलों में केवल इसलिए डाल दिया गया है कि ये लोग वह सब नहीं कर रहे जो सरकार चाहती है। आज असहमति की गुंजायश बहुत कम हो गई है। कुछ भी लिखते या बोलते वक्त हम सब पर एक अदृश्य सेंसर काम कर रहा होता है। आज अपनी देशभक्ति सिद्ध करने के लिए मुझे तिरंगा फहराना होगा, पाकिस्तान के कलाकारों व बॉलीवुड के आमिर खान, सलमान खान व शाहरुख खान को संदेह की नज़रों से देखना होगा, उनकी फिल्मों का बायकॉट करना होगा, भारत माता की जय कहना होगा, क्रिकेट मैच देखते हुए किसी अन्य देश के उम्दा प्रदर्शन पर चुप रहना होगा, पाकिस्तान और मुसलमानों को गाली देना होगा, भारतीय सेना के हर कारनामे का समर्थन करना होगा और जय श्री राम, राधे- राधे कहना होगा।

इस माहौल को पैदा करने में गोदी मीडिया की अहम भूमिका है। जेएनयू के छात्र नेता उमर खालिद की राजनीति से आप सहमत न हों, परन्तु एक खत, जो उसने आज़ादी की 75वीं सालगिरह पर अपने मित्र को लिखा है, से आप शायद ही असहमत हों। उमर खालिद की छवि हिंदी अख़बारों की सनसनीखेज़ सुर्खियों ने कैसे बिगाड़ी, इसका ज़िक्र उसने इस खत में किया है। इसके कुछ अंश यहां दे रहा हूं -

''एक सुबह, एक अखबार की हिंदी में चिल्ला रही सुर्खी थी, 'खालिद ने कहा था भाषण से काम नहीं चलेगा, खून बहाना पड़ेगा।' न सिर्फ सुर्खी में किए गए इस बड़े दावे के पक्ष में कोई तथ्य पेश नहीं किया था, इसके साथ कहीं यह डिस्क्लेमर देना भी जरूरी नहीं समझा गया था कि यह एक आरोप है, जो साबित नहीं हुआ है, और इसे कोर्ट की समीक्षा के लिए पेश भी नहीं किया गया है।

दो दिन बाद, उसी अखबार ने और सुर्खी लगाई, जो कि पिछली वाली सुर्खी से भी ज्यादा सनसनीखेज थी, 'खालिद चाहता था, मुसलमानों के लिए अलग देश'। उनके कहने का मतलब यह था कि दिल्ली के यमुनापार इलाके में हुए दंगे से, जिनमें मरने वालों में ज्यादातर खुद मुसलमान थे, मुसलमानों के लिए एक नया देश बनने वाला था! मुझे समझ में नहीं आया, इस पर रोया जाए या हंसा जाए! जो लोग हर दिन इस जहर की खुराक ले रहे हैं, मैं उनका विचार कैसे बदल सकता हूं?

कुछ मौकों पर तो मीडिया का झूठ पुलिस के झूठ से भी आगे बढ़ गया है। एक न्यूज रिपोर्ट में- इस बार भी एक प्रमुख हिंदी अख़बार- में यह दावा किया गया कि दंगे भड़काने में कोई कसर नहीं छोड़ने के लिए मैंने 16 फरवरी, 2020 को (दंगे शुरू होने से एक हफ्ते पहले) गुप्त तरीके से ज़ाकिर नगर (नई दिल्ली) में शरजील इमाम से मुलाकात की थी। जबकि हकीकत यह है कि 16 फरवरी, 2020 को (पुलिस भी इसका सत्यापन करेगी) मैं दिल्ली से 1,136 किलोमीटर दूर अमरावती, महाराष्ट्र में था। और उस रात शरजील इमाम- और कोई भी इस पर सवाल खड़े नहीं कर सकता- तिहाड़ जेल में थे क्योंकि उन्हें करीब 20 दिन पहले, एक दूसरे मामले में गिरफ्तार किया गया था।''

आज हमारे लेखकों व बुद्धिजीवियों को यूएपीए, एनएसए जैसे कानूनों का विरोध करना चाहिए। इन कानूनों के अंतर्गत गिरफ्तार लोगों की जमानत के अधिकार, समय पर मामले की सुनवाई जैसे बुनियादी अधिकारों के लिए आवाज उठानी चाहिए। जिन लाखों लोगों ने इस देश की आजादी के लिए अपनी जान की कुर्बानी दी, उनके सपनों का भारत समानता और न्याय की बुनियाद पर बनाने का कार्यभार हमारा है।

आपका

15 नवंबर, 2022 **अजेय कुमार**